

Course: B.A. Part I (Hons) Psychology.

Paper: I

Topic: Learning theory by Thorndike

Prepared by: Prof. (Dr.) Kanak Varma,
Co-ordinator, U.G. Psychology
N.O.U.

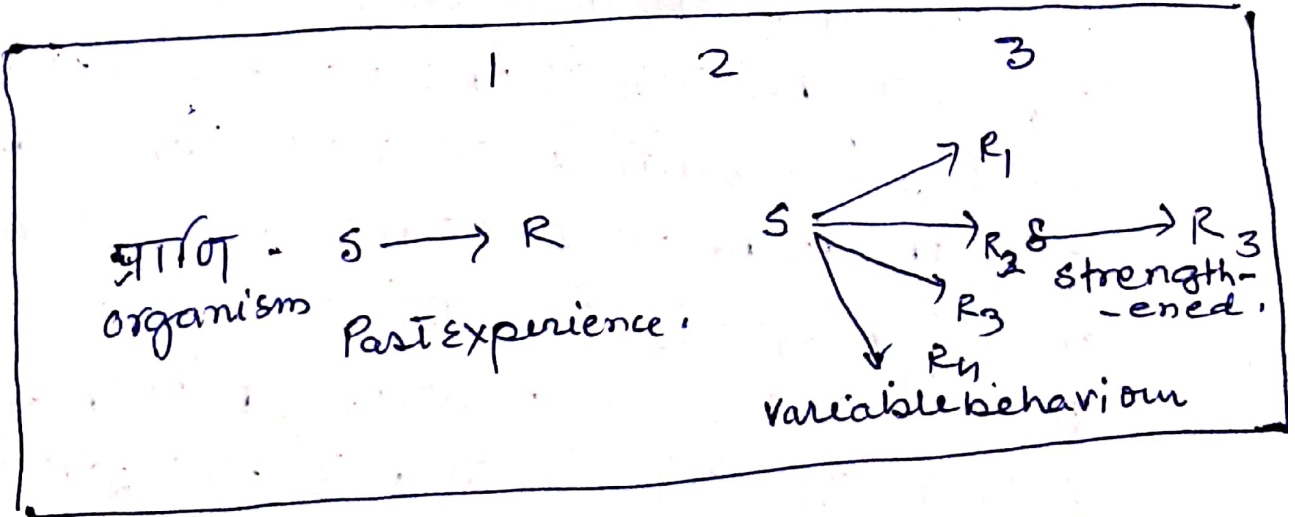
शिक्षण अथवा अधिगम के कई सिद्धान्त हैं जैसे - पैबलव, थॉर्नडाइक, स्किनर तथा कोह्लर इत्यादि।

इस अध्याय में थॉर्नडाइक के सिद्धान्त की व्याख्या की जा रही है जो प्रयत्न भूल के सिद्धान्त के नाम से (Trial and Error theory) जानी जाती है, इस सिद्धान्त का मुख्य आचार सम्बन्ध (Connection) है, जैसा कि नाम से ही स्पष्ट होना है इसमें प्राणि अपने पूर्व अनुभवों के आचार पर किसी सीखने वाली परिस्थिति या समस्या को हल करने का प्रयास करता है। शुरु-शुरु में इसमें अनेक अलंगत गलतियाँ करता है इसी दौरान अचानक ही सही उत्पत्तियाँ व्यवहार प्रदर्शित हो जाता है और इसी बुद्धि व्यवहार अथवा अनुष्ठित की पुनरावृत्ति करना चाहता है।

थॉर्नडाइक ने अपना प्रयोग चूहे-विभिन्न

पर किया है जिसमें एक बस्स के अन्दर दरवाजा खोलने के लिए किया गया कि दरवाजे के बाहर कुछ खाने का सामान रखा गया। कई निरर्थक प्रयासों के बाद वे दरवाजा खोलना सीख गए तथा कुछ प्रयासों के बाद बिना गलती के एक बार में दरवाजा खोल लेते थे, थार्नडाइक के अनुसार किसी भी नए परिस्थिति में प्राणी इस प्रकार शिक्षण करता है :-

1. अपने पूर्व अनुभवों के अनुसार समस्या का समाधान ढूँढने की कोशिश करना ।
2. शुरु में असफलताओं का होना ।
3. अचानक शुद्ध अनुक्रिया का होना ।
4. लगातार प्रयास के बाद गलतियों में कमी आना
5. शुद्ध अनुक्रिया को पुनरा
6. नये परिस्थिति में शुद्ध अनुक्रिया से सम्बन्ध स्थापित करना



थार्नडाइक ने (193) में अपने अचिजम के सिधान्त के आधार पर यह अनुभव किया कि यह सिधान्त मुख्य रूप से तीन नियमों पर आधारित है —

होती, इन्हें हम जब चाहे तब अपने चेतन
मस्तिष्क में ला सकते हैं। ये पर्दे के पीछे की
चीजें हैं, परन्तु जैसे ही इन्हें हम अपनी
चेतन में आवश्यकतानुसार ला सकते हैं,

आकारात्मक पदार्थ का तीसरा हिस्सा
जो सबसे बड़ा और पानी के अन्दर होता
है वह अचेतन है। इनके स्मृतियों को
हम अपनी चेतना में किन्हीं अन्य माध्यमों
से ला सकते हैं जैसे - दैनिक जीवन की
भूलें (Psychopathology of everyday life,
स्पष्ट (dreams) इत्यादि। फ्रायड के
अनुसार यह सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है
जिसमें व्यक्ति के यौन सम्बन्धी बातें तथा
जिन बातों की सामाजिक मान्यता नहीं किन्तु
उन्हें दावा कर रखा जाता है पर वहां जाकर
यै इच्छाएं मरती नहीं अपितु किसी
अन्य विधियों के द्वारा अपनी संतुष्टि
चाहती है, जैसा उमर उल्टे कर दिया जा
सुका है, यह पूरे मस्तिष्क का 9/10 हिस्सा
होता है,

यह हमारे व्यवहारों का नियंत्रण करता है ।

अकारणिक पद्यों के तीसरे भाग की व्याख्या क्रायड ने सीमित तरीके से की है। मिलके कारण उनकी अलोचनाएँ हुईं; बाद में उन्होंने इसका विस्तृत विवरण दिया जिसमें ~~sex~~ के अलावा इन्होंने life energy को जोड़ा ताकि इसमें विविधताएँ आसकी ।

Nalanda Open University

Course: B.A. Part I (Hons) Psychology,

Paper: II

Topic: Topographical Aspects of mind.

Prepared by: Prof (Dr) Kamak Varma
co-ordinator UG. Psychology
N.O.U.

मानसिक संरचना (Mental structure) फ्रायड के एक महत्वपूर्ण देन है, फ्रायड के असामान्य मनोविज्ञान का जनक कहा जाता है, इस प्रमुख विवेचना को फ्रायड ने कार्पनिक माना है पर इसके अस्तित्वों को नकारा नहीं जा सकता है, इसके दो प्रभाग हैं।

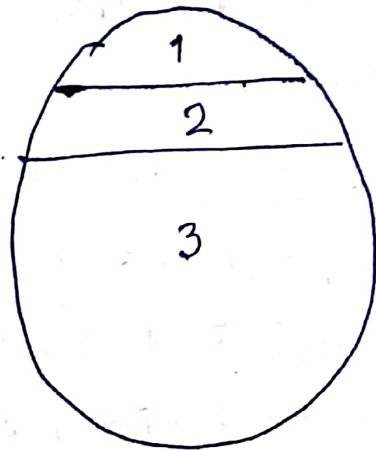
Topographical Aspect आकारात्मक पहलू तथा गत्यात्मक पहलू dynamic Aspect इसमें दोनों ही काफी महत्वपूर्ण हैं तथा इसका प्रमाण हमारे व्यापार से मिलता है -

Dynamic aspect गत्यात्मक पहलू हमारे व्यक्तित्व विकास से सम्बन्धित है -

1. Id (इड)
2. Ego (अँड)
3. Super Ego (प्रँयाइ)

जब कि आकारात्मक पहलू (Topographical aspect) हमारे मन के महत्वपूर्ण अंग है।

1. Conscious (चेतन)
2. Sub-conscious (अवचेतन)
3. Unconscious (अचेतन)



आकारात्मक पहलूओं की तुलना फ्रायडने एक बड़े बर्तन के टुकड़े से की है जिले अगर बर्तनी भरे पानी में डुबाया जाय तो उसका

एक छोटा सा हिस्सा पानी के बाहर दिखाई देता है, यह मन का चेतन भागी पहला भाग है, फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के मन का यह हिस्सा जिले में अनुभव एवं स्मृति का भाग है जो शत प्रतिशत ताजी होती है।

आकारात्मक पहलू का दूसरा भाग वह है जो पानी के अन्दर से भी दिखाई देती है। यह पहले भाग की तरह ये ताजी नहीं

1. Law of Readiness (तत्परता के नियम)
2. Law of Exercise (अभ्यास के नियम) तथा
3. Law of Effect (प्रभाव के नियम)।

तत्परता के नियम के आधार :-

- कार्य के लिए तत्पर होने पर कार्य सहजता से होते हैं।
- इसके कारण उत्पन्न होती है।
- इसमें अगर उन्हें बाधित किया जाय तो उन्हें कष्ट तथा असंतुष्टी होती है।
- तत्पर न रहने पर उन्हें कार्य करने का निर्देश देने पर भी उन्हें असंतुष्टी होती है।
- अत्यधिक लक्ष्मण पर भी कार्य का निर्देश देने पर कार्य का परिणाम अच्छा नहीं होता है।

अभ्यास के नियम के आधार :-

- यह उपयोग एवं अनुप्रयोग के नियम पर आधारित है।

— अभ्यास से पूर्णता आती है।

प्रभाव के नियम के आधार :-

- प्रभाव व्यवहार को मजबूत बनाती है।
- जिस व्यवहार का प्रभाव संतोषप्रद होता है वह मजबूत होता है।
- जिस व्यवहार का प्रभाव संतोषप्रद नहीं होता है वह कमजोर होता है।

इसके अलावा भी इस सिद्धान्त में कई और जोष (Subordinate laws) नियम भी हैं। —

1. बहु अनुक्रिया (Multiple Response)

2. Self attitude (अभिवृत्ति)
3. तत्वों की प्रबलता (Pre-potency of elements)
4. सादृश्य द्वारा अनुक्रिया (Response by Analogy)
5. सादृश्यात्मक अन्तरण (Associative shifting)
6. सह सम्बद्धता (Belongingness)

Evaluation & criticism:

मूल्यांकन एवं आलोचना

सम्बद्धता सिद्धान्त (connection principle) पर आधारित है, प्रयास प्रसंगीय है परन्तु—

- इसे यांत्रिक (Mechanical) माना जाता है,
- व्यवहारं यद्यं सङ्गत-असङ्गत सङ्गत है पर होता नहीं
- अभ्यास को भी अत्यधिक महत्व दिया गया है,
- अधिगम में लूक भी महत्वपूर्ण है पर इनमें उनका कोई महत्व नहीं,
- सभी अधिगम की व्याख्या परिस्थितिकर नहीं होती ।